



Sudha

30 Nov 1950

03:30 AM

Surat

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120372401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 29-30/11/1950
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 03:30:00 घंटे
इष्ट _____: 51:20:10 घटी
स्थान _____: Surat
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 02:51:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:11:51 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:24:11 घंटे
सूर्योदय _____: 06:57:56 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:55:38 घंटे
दिनमान _____: 10:57:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 13:57:01 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 26:23:53 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: ब्रह्म
करण _____: तैत्तिरीय
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हो-होमवती
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1872	मार्गशीर्ष	9
पंजाबी	संवत : 2007	मार्गशीर्ष	15
बंगाली	सन् : 1357	मार्गशीर्ष	14
तमिल	संवत : 2007	कार्तिगई	15
केरल	कोल्लम : 1126	वृश्चिकम	15
नेपाली	संवत : 2007	मार्गशीर्ष	15
चैत्रादि	संवत : 2007	मार्गशीर्ष	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2007	कार्तिक	कृष्ण 5

पंचांग

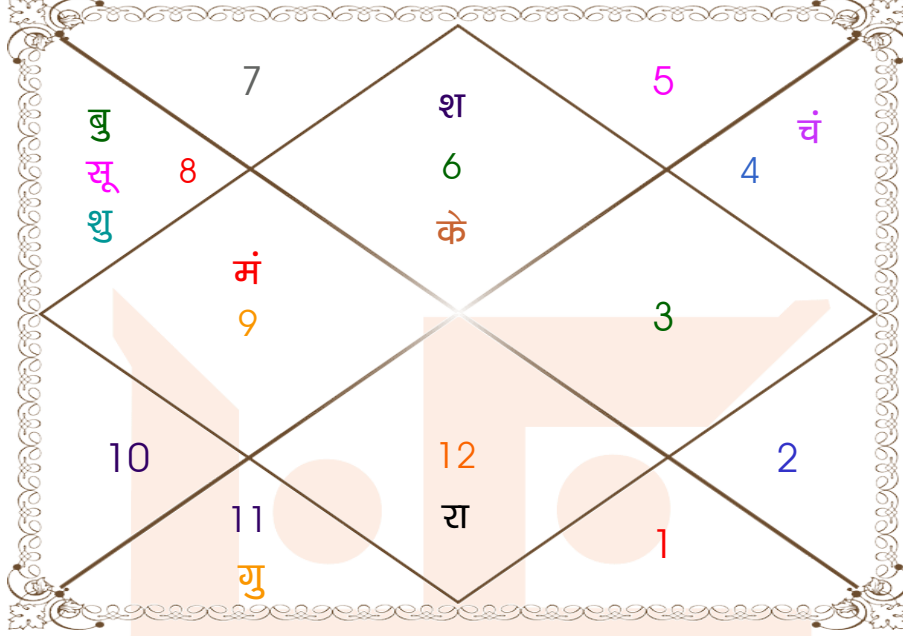
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:51:26
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:38:14 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
योग समाप्ति काल _____ : 16:52:51 घंटे
जन्म योग _____ : ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 19:02:15 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 42:09:25
भभोग _____ : 65:23:11
भोग्य दशा काल _____ : शनि 6 वर्ष 9 मा 12 दि

घात चक्र

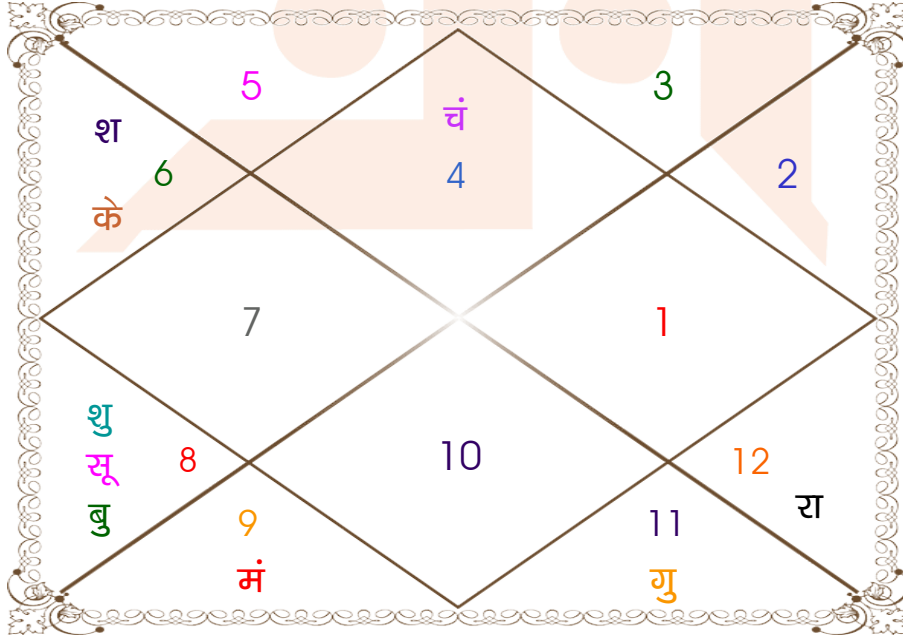
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा			
गु			चं
मं	शु सू बु		के ल श

लग्न कुंडली

		रा	
		गु	
चं			
ल के		मं	सू बु शु

विंशोत्तरी
शनि 6वर्ष 9मा 12दि
शनि

30/11/1950

12/09/2058

शनि	12/09/1957
बुध	12/09/1974
केतु	12/09/1981
शुक्र	12/09/2001
सूर्य	12/09/2007
चन्द्र	12/09/2017
मंगल	12/09/2024
राहु	12/09/2042
गुरु	12/09/2058

योगिनी
धान्या 1वर्ष 0मा 26दि
भामरी

26/12/2023

26/12/2027

भामरी	05/06/2024
भद्रिका	25/12/2024
उल्का	26/08/2025
सिद्धा	06/06/2026
संकटा	26/04/2027
मंगला	06/06/2027
पिंगला	26/08/2027
धान्या	26/12/2027

Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

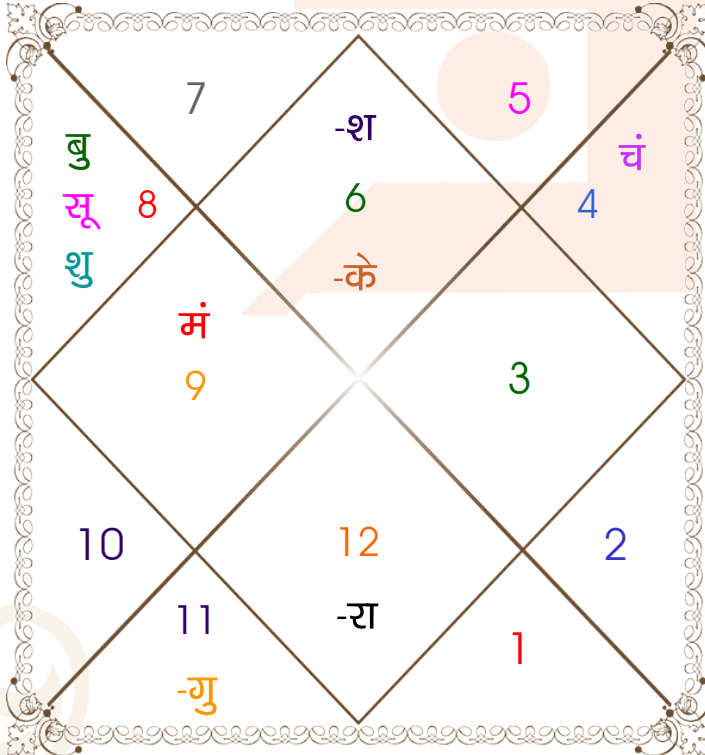
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	26:23:53	333:09:14	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	---
सूर्य			वृश्चि	13:57:01	01:00:47	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	11:54:19	12:15:39	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	स्वराशि
मंगल			धनु	24:49:38	00:46:16	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	29:17:34	01:28:59	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	सम राशि
गुरु			कुंभ	06:36:12	00:06:54	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	सम राशि
शुक्र	अ		वृश्चि	17:52:23	01:15:24	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	सम राशि
शनि			कन्या	07:33:29	00:04:21	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	केतु	मित्र राशि
राहु	व		मीन	01:58:32	00:05:50	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु	व		कन्या	01:58:32	00:05:50	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		मिथु	15:28:44	00:02:05	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	---
नेप			कन्या	25:36:48	00:01:38	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
प्लूटो	व		कर्क	26:40:25	00:00:14	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	---
दशम भाव			मिथु	26:16:25	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	केतु	--

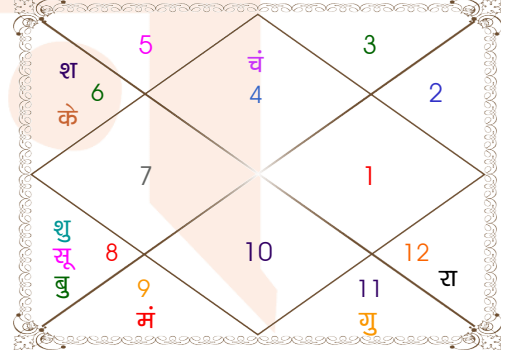
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:10:18

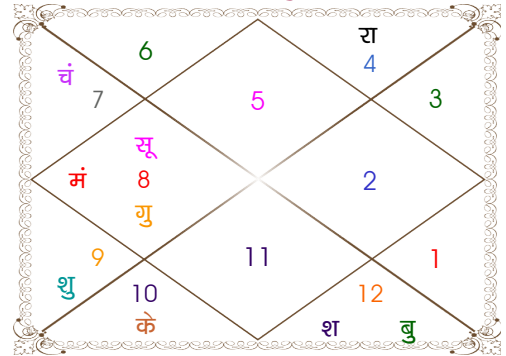
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Ankkyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 11:22:38	कन्या 26:23:53
2	तुला 11:22:38	तुला 26:21:23
3	वृश्चिक 11:20:09	वृश्चिक 26:18:54
4	धनु 11:17:39	धनु 26:16:25
5	मकर 11:17:39	मकर 26:18:54
6	कुम्भ 11:20:09	कुम्भ 26:21:23
7	मीन 11:22:38	मीन 26:23:53
8	मेष 11:22:38	मेष 26:21:23
9	वृष 11:20:09	वृष 26:18:54
10	मिथुन 11:17:39	मिथुन 26:16:25
11	कर्क 11:17:39	कर्क 26:18:54
12	सिंह 11:20:09	सिंह 26:21:23

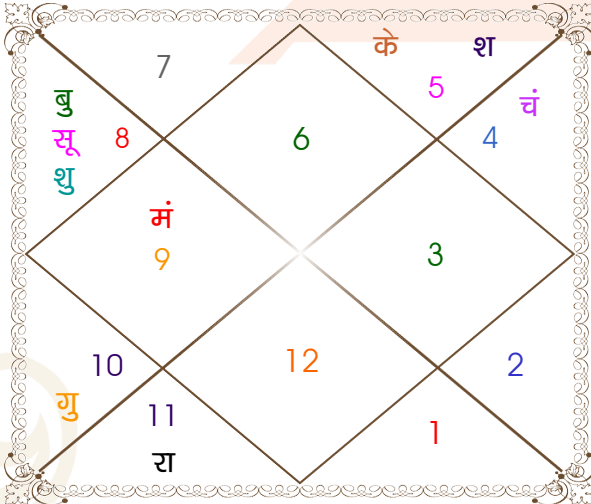
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 26:23:53	
2	तुला 25:40:40	
3	वृश्चिक 25:41:56	
4	धनु 26:16:25	
5	मकर 27:24:40	
6	कुम्भ 28:03:39	
7	मीन 26:23:53	
8	मेष 25:40:40	
9	वृष 25:41:56	
10	मिथुन 26:16:25	
11	कर्क 27:24:40	
12	सिंह 28:03:39	

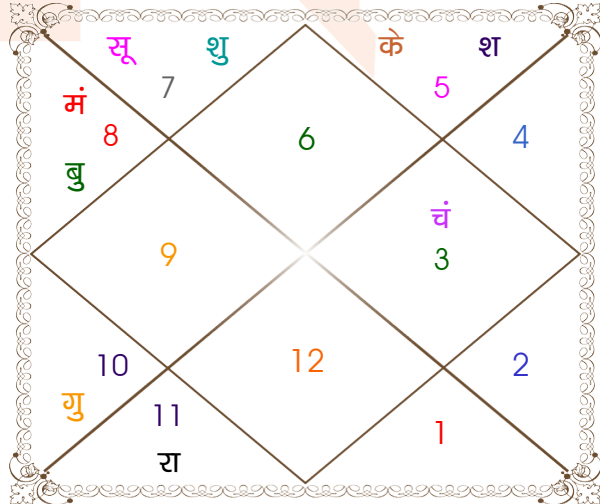
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Ankkyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

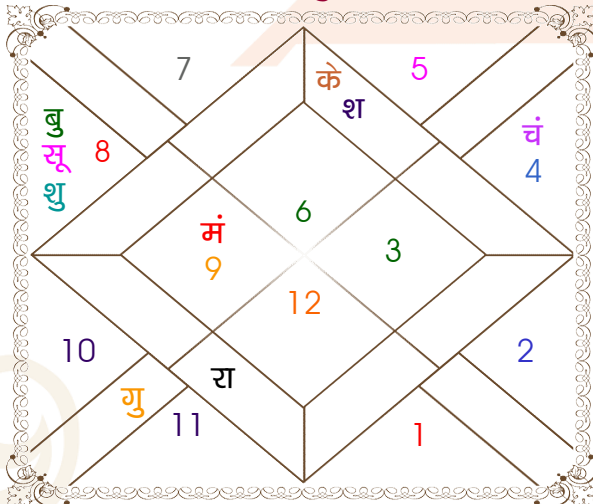
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा मुदित आगमन 2.51 49 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	वृद्ध स्वस्थ भोजन 8.33 64 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत मुदित गमन 5.44 25 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल शक्त गमन 3.52 60 %
गुरु	कलत्र	धन	कुमार शक्त सभा 0.61 34 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	युवा विकल गमन 2.71 39 %
शनि	ज्ञाति	आयु	वृद्ध मुदित गमन 5.09 13 %
राहु	---	ज्ञान	मृत शान्त शयन 0.00 62 %
केतु	---	मोक्ष	मृत खल गमन 0.00 0 %
कुल			28.23

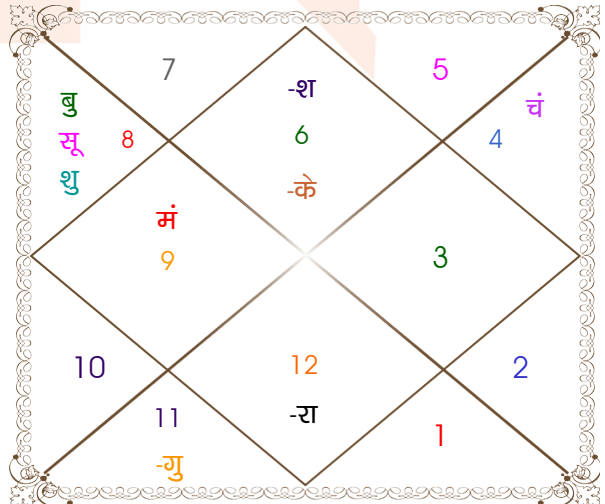
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 9 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
30/11/1950	12/09/1957	12/09/1974	12/09/1981	12/09/2001
12/09/1957	12/09/1974	12/09/1981	12/09/2001	12/09/2007
00/00/0000	बुध 09/02/1960	केतु 08/02/1975	शुक्र 11/01/1985	सूर्य 30/12/2001
00/00/0000	केतु 05/02/1961	शुक्र 09/04/1976	सूर्य 12/01/1986	चंद्र 01/07/2002
00/00/0000	शुक्र 07/12/1963	सूर्य 15/08/1976	चंद्र 12/09/1987	मंगल 06/11/2002
00/00/0000	सूर्य 12/10/1964	चंद्र 16/03/1977	मंगल 12/11/1988	राहु 01/10/2003
30/11/1950	चंद्र 14/03/1966	मंगल 12/08/1977	राहु 12/11/1991	गुरु 19/07/2004
चंद्र 17/03/1951	मंगल 11/03/1967	राहु 31/08/1978	गुरु 13/07/1994	शनि 01/07/2005
मंगल 25/04/1952	राहु 27/09/1969	गुरु 07/08/1979	शनि 12/09/1997	बुध 07/05/2006
राहु 02/03/1955	गुरु 03/01/1972	शनि 15/09/1980	बुध 13/07/2000	केतु 12/09/2006
गुरु 12/09/1957	शनि 12/09/1974	बुध 12/09/1981	केतु 12/09/2001	शुक्र 12/09/2007
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
12/09/2007	12/09/2017	12/09/2024	12/09/2042	12/09/2058
12/09/2017	12/09/2024	12/09/2042	12/09/2058	00/00/0000
चंद्र 13/07/2008	मंगल 08/02/2018	राहु 26/05/2027	गुरु 30/10/2044	शनि 15/09/2061
मंगल 11/02/2009	राहु 27/02/2019	गुरु 18/10/2029	शनि 14/05/2047	बुध 25/05/2064
राहु 13/08/2010	गुरु 02/02/2020	शनि 24/08/2032	बुध 19/08/2049	केतु 04/07/2065
गुरु 13/12/2011	शनि 13/03/2021	बुध 14/03/2035	केतु 25/07/2050	शुक्र 03/09/2068
शनि 13/07/2013	बुध 10/03/2022	केतु 31/03/2036	शुक्र 25/03/2053	सूर्य 15/08/2069
बुध 12/12/2014	केतु 07/08/2022	शुक्र 01/04/2039	सूर्य 12/01/2054	चंद्र 30/11/2070
केतु 14/07/2015	शुक्र 07/10/2023	सूर्य 24/02/2040	चंद्र 14/05/2055	00/00/0000
शुक्र 13/03/2017	सूर्य 12/02/2024	चंद्र 25/08/2041	मंगल 19/04/2056	00/00/0000
सूर्य 12/09/2017	चंद्र 12/09/2024	मंगल 12/09/2042	राहु 12/09/2058	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 6 वर्ष 9 मा 0 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 12/09/2024 26/05/2027	राहु - गुरु 26/05/2027 18/10/2029	राहु - शनि 18/10/2029 24/08/2032	राहु - बुध 24/08/2032 14/03/2035	राहु - केतु 14/03/2035 31/03/2036
राहु 07/02/2025 गुरु 18/06/2025 शनि 21/11/2025 बुध 10/04/2026 केतु 06/06/2026 शुक्र 18/11/2026 सूर्य 06/01/2027 चंद्र 29/03/2027 मंगल 26/05/2027	गुरु 20/09/2027 शनि 05/02/2028 बुध 09/06/2028 केतु 30/07/2028 शुक्र 23/12/2028 सूर्य 05/02/2029 चंद्र 19/04/2029 मंगल 09/06/2029 राहु 18/10/2029	शनि 01/04/2030 बुध 27/08/2030 केतु 26/10/2030 शुक्र 18/04/2031 सूर्य 09/06/2031 चंद्र 04/09/2031 मंगल 03/11/2031 राहु 08/04/2032 गुरु 24/08/2032	बुध 03/01/2033 केतु 27/02/2033 शुक्र 01/08/2033 सूर्य 16/09/2033 चंद्र 03/12/2033 मंगल 26/01/2034 राहु 15/06/2034 गुरु 17/10/2034 शनि 14/03/2035	केतु 05/04/2035 शुक्र 08/06/2035 सूर्य 27/06/2035 चंद्र 29/07/2035 मंगल 21/08/2035 राहु 17/10/2035 गुरु 07/12/2035 शनि 06/02/2036 बुध 31/03/2036
राहु - शुक्र 31/03/2036 01/04/2039	राहु - सूर्य 01/04/2039 24/02/2040	राहु - चंद्र 24/02/2040 25/08/2041	राहु - मंगल 25/08/2041 12/09/2042	गुरु - गुरु 12/09/2042 30/10/2044
शुक्र 30/09/2036 सूर्य 24/11/2036 चंद्र 23/02/2037 मंगल 28/04/2037 राहु 09/10/2037 गुरु 04/03/2038 शनि 25/08/2038 बुध 27/01/2039 केतु 01/04/2039	सूर्य 17/04/2039 चंद्र 15/05/2039 मंगल 03/06/2039 राहु 22/07/2039 गुरु 04/09/2039 शनि 26/10/2039 बुध 12/12/2039 केतु 31/12/2039 शुक्र 24/02/2040	चंद्र 09/04/2040 मंगल 11/05/2040 राहु 02/08/2040 गुरु 14/10/2040 शनि 08/01/2041 बुध 27/03/2041 केतु 28/04/2041 शुक्र 28/07/2041 सूर्य 25/08/2041	मंगल 16/09/2041 राहु 13/11/2041 गुरु 03/01/2042 शनि 04/03/2042 बुध 28/04/2042 केतु 20/05/2042 शुक्र 23/07/2042 सूर्य 11/08/2042 चंद्र 12/09/2042	गुरु 25/12/2042 शनि 27/04/2043 बुध 16/08/2043 केतु 30/09/2043 शुक्र 07/02/2044 सूर्य 17/03/2044 चंद्र 21/05/2044 मंगल 05/07/2044 राहु 30/10/2044
गुरु - शनि 30/10/2044 14/05/2047	गुरु - बुध 14/05/2047 19/08/2049	गुरु - केतु 19/08/2049 25/07/2050	गुरु - शुक्र 25/07/2050 25/03/2053	गुरु - सूर्य 25/03/2053 12/01/2054
शनि 26/03/2045 बुध 04/08/2045 केतु 27/09/2045 शुक्र 28/02/2046 सूर्य 15/04/2046 चंद्र 01/07/2046 मंगल 24/08/2046 राहु 10/01/2047 गुरु 14/05/2047	बुध 08/09/2047 केतु 26/10/2047 शुक्र 12/03/2048 सूर्य 23/04/2048 चंद्र 01/07/2048 मंगल 18/08/2048 राहु 20/12/2048 गुरु 09/04/2049 शनि 19/08/2049	केतु 07/09/2049 शुक्र 03/11/2049 सूर्य 20/11/2049 चंद्र 19/12/2049 मंगल 08/01/2050 राहु 28/02/2050 गुरु 14/04/2050 शनि 07/06/2050 बुध 25/07/2050	शुक्र 04/01/2051 सूर्य 21/02/2051 चंद्र 14/05/2051 मंगल 09/07/2051 राहु 03/12/2051 गुरु 10/04/2052 शनि 12/09/2052 बुध 28/01/2053 केतु 25/03/2053	सूर्य 09/04/2053 चंद्र 03/05/2053 मंगल 20/05/2053 राहु 03/07/2053 गुरु 11/08/2053 शनि 26/09/2053 बुध 07/11/2053 केतु 24/11/2053 शुक्र 12/01/2054

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र 12/01/2054 14/05/2055	गुरु - मंगल 14/05/2055 19/04/2056	गुरु - राहु 19/04/2056 12/09/2058	शनि - शनि 12/09/2058 15/09/2061	शनि - बुध 15/09/2061 25/05/2064
चंद्र 21/02/2054 मंगल 22/03/2054 राहु 03/06/2054 गुरु 07/08/2054 शनि 23/10/2054 बुध 31/12/2054 केतु 28/01/2055 शुक्र 19/04/2055 सूर्य 14/05/2055	मंगल 03/06/2055 राहु 24/07/2055 गुरु 07/09/2055 शनि 31/10/2055 बुध 18/12/2055 केतु 07/01/2056 शुक्र 04/03/2056 सूर्य 21/03/2056 चंद्र 19/04/2056	राहु 28/08/2056 गुरु 23/12/2056 शनि 11/05/2057 बुध 12/09/2057 केतु 02/11/2057 शुक्र 28/03/2058 सूर्य 11/05/2058 चंद्र 23/07/2058 मंगल 12/09/2058	शनि 05/03/2059 बुध 08/08/2059 केतु 11/10/2059 शुक्र 11/04/2060 सूर्य 05/06/2060 चंद्र 05/09/2060 मंगल 08/11/2060 राहु 21/04/2061 गुरु 15/09/2061	बुध 01/02/2062 केतु 31/03/2062 शुक्र 10/09/2062 सूर्य 30/10/2062 चंद्र 19/01/2063 मंगल 18/03/2063 राहु 12/08/2063 गुरु 21/12/2063 शनि 25/05/2064
शनि - केतु 25/05/2064 04/07/2065	शनि - शुक्र 04/07/2065 03/09/2068	शनि - सूर्य 03/09/2068 15/08/2069	शनि - चंद्र 15/08/2069 00/00/0000	
केतु 18/06/2064 शुक्र 24/08/2064 सूर्य 13/09/2064 चंद्र 17/10/2064 मंगल 10/11/2064 राहु 09/01/2065 गुरु 04/03/2065 शनि 08/05/2065 बुध 04/07/2065	शुक्र 13/01/2066 सूर्य 11/03/2066 चंद्र 16/06/2066 मंगल 22/08/2066 राहु 12/02/2067 गुरु 16/07/2067 शनि 15/01/2068 बुध 27/06/2068 केतु 03/09/2068	सूर्य 20/09/2068 चंद्र 19/10/2068 मंगल 08/11/2068 राहु 30/12/2068 गुरु 14/02/2069 शनि 10/04/2069 बुध 29/05/2069 केतु 19/06/2069 शुक्र 15/08/2069	चंद्र 03/10/2069 मंगल 05/11/2069 राहु 31/01/2070 गुरु 18/04/2070 शनि 19/07/2070 बुध 09/10/2070 केतु 12/11/2070 शुक्र 30/11/2070 00/00/0000	

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

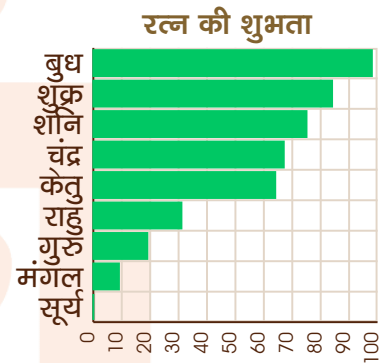
मूलांक	3
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 2
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	84%	पराक्रम, भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	75%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	67%	धनार्जन
लहसुनिया	केतु	64%	स्वास्थ्य, पराक्रम
गोमेद	राहु	31%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	19%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
मूंगा	मंगल	9%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	पराक्रम हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	12/09/1957	0%	54%	0%	100%	19%	91%	88%	44%	52%
बुध	12/09/1974	12%	54%	9%	100%	19%	91%	75%	31%	64%
केतु	12/09/1981	0%	54%	22%	98%	19%	91%	62%	6%	77%
शुक्र	12/09/2001	0%	54%	9%	100%	19%	97%	81%	44%	70%
सूर्य	12/09/2007	25%	73%	22%	98%	31%	72%	62%	6%	52%
चंद्र	12/09/2017	12%	79%	9%	100%	19%	84%	75%	6%	52%
मंगल	12/09/2024	12%	73%	34%	86%	31%	84%	75%	6%	70%
राहु	12/09/2042	0%	54%	0%	98%	19%	91%	81%	53%	52%
गुरु	12/09/2058	12%	73%	22%	86%	44%	72%	75%	31%	64%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के

पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेंगे। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपके लिए शुक्र रत्न हीरा शुभदायक रहेगा। शुक्र रत्न हीरा आपको संगीत एवं कला के क्षेत्र में रुचि बना सकता है। रत्न की शुभता से आपकी श्रवण क्षमता का विकास होगा। यह हीरा रत्न धन व वैभवता देगा। हीरा

रत्न आपको पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान एवं पर्यटनशील बना सकता है। रत्न की शक्तियां आपको साहसी व समर्थक बनायेगी। आप भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे। दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि के लिए भी हीरा रत्न उत्तम रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपत्ति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी दालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं

२ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे हैं इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल 'केट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद पहनने पर आपको अपना व्यापार करने पर हानि की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको अपने कार्यों के अनुकूल सराहना प्राप्त नहीं हो पाएगी। यह रत्न आपको स्वभाव से क्रोधी और अहंकारी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप अपनी सफलता से असंतुष्ट हो सकते हैं। आपका स्वभाव कुछ हद तक उग्र हो सकता है। रत्न की शुभता आपके साथ न होने के कारण आपकी संगति और संबंध अयोग्य व्यक्तियों के साथ हो सकती है। दुष्ट व्यक्तियों के द्वारा आपको धन हानि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी धार्मिक आस्था में कमी कर सकता है।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद

रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते हैं। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का ह्रास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते हैं। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपका भूमि-भवन का सुख बाधित होगा। इसके प्रभाव से मंगलिक योग की अशुभता बढ़ सकती है। यह रत्न आपके संतान सुख, घर-परिवार के सुख में आंशिक कमी करेगा। माता से संबन्ध कष्टकारी हो सकते हैं। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे हैं। अतः मूंगा रत्न प्रभाव से आपको पैतृक सम्पत्ति खोने का भय भी सता सकता है। अपने परिवार से आपको अलग रहना पड़ सकता है। शिक्षा प्राप्ति में कुछ व्यवधान आ सकते हैं। साथ ही रत्न धारण से आपके प्रतिद्वंदी अधिक प्रबल हो सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न

मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको रेल यात्रा की अवधि के दौरान कष्ट दे सकता है। छोटे भाई-बहनों का अभाव आपको हो सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपमें धैर्यहीनता, पुरुषार्थ एवं स्वाभिमानी गुणों की कमी आ सकती है। आपमें कठोरता और अनुशासनप्रियता की भावना अधिक हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपमें चारित्रिक दोष आ सकते हैं। कुछ बुरी आदतें भी आपमें आ सकती हैं। चोरी का भय अथवा मामा या पड़ोसियों को कुछ कष्ट हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग कम मिलेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपमें उदारता की कमी, आत्मा व चित्त की शुद्धि की कमी भी कर सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(12/09/2024 - 12/09/2042)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(12/09/2042 - 12/09/2058)

गुरु की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ॐ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/11/1952-24/04/1953 21/08/1953-12/11/1955	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966 03/11/1966-20/12/1966	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी लेकिन शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। मांगलिक दोष के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपके पति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पति के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

अतः मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के

मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी।
दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर

पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, कोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील प्रवृत्ति के होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में ये तत्पर रहते हैं। सदगुणों से ये सम्पन्न रहते हैं। ये जातक सौभाग्य से युक्त रहते हैं तथा सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में इनको अल्प परिश्रम से ही सफलता प्राप्त हो जाती है जिससे इनके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहते हैं तथा जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करते हैं फलतः इनका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। समाज में ये सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। राजनीति में इनकी रुचि अल्प ही रहती है परन्तु अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण प्रशासनिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते रहते हैं क्योंकि ये कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। साथ ही भावुकता की भी इनमें न्यूनता रहती है तथा समस्त कार्य बुद्धि से संचालित होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि होगी फलतः कला संगीत एवं लेखन आदि कार्यों में परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीव्र होगी तथा गूढ़ विचारों या समस्याओं को सुलझाने में समर्थ होंगी। जीवन में भावुकता से आप कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगी तथा अत्यंत ही सोच विचारकर अपने कार्यों को पूर्ण करेंगी।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। साथ ही आकर्षक स्वरूप एवं व्यक्तित्व से भी युक्त रहेंगी। अपने संभाषण में आप मधुर एवं अल्प शब्दों का प्रयोग करेंगी। धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न होंगी तथा सांसारिक एवं भौतिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगी। लेखन या सम्पादन संबंधी कार्यों से आपको अतिरिक्त लाभ उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही आप प्रायः स्थिर एवं स्थाई कार्य करना पसन्द करेंगी।

आपके प्रवृत्ति परोपकारी होगी तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा सहायता तथा परोपकार संबंधी कार्यों में तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आप सत्कर्मों को सम्पन्न करेंगी तथा पुत्र संतति से आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही विदुषी चतुर एवं विचारक के रूप में भी आपको समाज में ख्याति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त नैतिक मूल्यों का अनुपालन करने में भी तत्पर रहेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कृत्यों तथा अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी को पराजित करने में समर्थ होंगी तथा वे आपसे प्रभावित होंगे। मित्र वर्ग में आप एक आदरणीय महिला होंगी तथा उनसे आपको पूर्ण लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप अपनी विद्वता बुद्धिमता परिश्रम एवं पराक्रम

से जीवन में वांछित सफलताओं को प्राप्त करेंगी तथा समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने जीवन को व्यतीत करेंगी ।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उद्देश्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा मंगल भी मित्र राशि में होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इनके प्रभाव से जीवन में आप समस्त वांछित सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप स्वयं भी एक पराक्रमी एवं परिश्रमी महिला होंगी अतः अपने इन गुणों से भी भौतिक सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। इससे आपको ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समाज में भी उच्चस्तर बना रहेगा एवं वांछित सम्मान की भी प्राप्ति होगी।

आपको जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा इसकी आपके पास बहुलता होगी। भाईयों के सहयोग एवं प्रभाव से भी आपको धन-सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा चल या अचल सम्पत्ति बनाने में समर्थ होंगी। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से अधिक लाभ होगा लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिये।

आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा इसमें सुखपूर्वक निवास करेंगी। आपका आवास आधुनिक सुख सुविधाओं से पूर्ण होगा तथा भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से भी सुसज्जित होगा। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप तत्पर रहेंगी। आपका आवास किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था में ही आप वाहन प्राप्त करके सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित तथा भौतिकवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपने व्यवहार कुशलता से पारिवारिक सदस्यों पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगी तथा उन्हें यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनका विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक या नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। लेकिन आप दोनों के मध्य सैद्धांतिक मतभेदों की प्रबलता होगी फलतः यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अध्ययन के प्रति भी रुचि रहेगी। अतः प्रारंभ से ही आपको परीक्षाओं में अच्छे अंकों की प्राप्ति होगी परंतु स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में कोई पाठ्यक्रम करें तो उससे आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी जिससे आप में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य निर्माण के लिए तत्पर होंगी।

नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल की चतुर्थ भाव में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आप रक्त चाप या हृदय संबंधी कष्ट की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि आप बचपन से ही खान-पान पर नियंत्रण रखें तथा ऐसी पदार्थों का उपयोग न करें जिससे रक्त चाप या हृदय प्रभावित होता हो तो उपरोक्त परेशानियों में न्यूनता आएगी तथा सुखपूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रुचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगी। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

शनि की राशि के पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगी। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगी। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मीन राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रवृत्ति आस्तिक एवं धनाढ्य होता है परन्तु राहु जैसे पाप ग्रह के प्रभाव से उसमें उग्रता, पराक्रम एवं साहस का भाव भी विद्यमान होता है एवं भौतिकता के प्रति मन में विशेष आकर्षण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनमें उग्रता का भाव भी विद्यमान होगा। वे साहसी होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। भौतिकता के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा तथा उनकी प्राप्ति में सर्वदा तत्पर होंगे लेकिन राहु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी फलतः परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से कम ही पालन करेंगे।

आपके पति का वर्ण श्यामवर्ण तथा कद ऊंचा होगा। शारीरिक रूप से उनमें पतलापन रहेगा परन्तु शरीर में पुष्टता होंगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। भौतिकता के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा एवं पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का अनुपालन करेंगे।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व की वार्ताओं में भी व्यवधान आएं। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा एवं राहु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं आपस में प्रेम तथा समानता का भाव होगा। परन्तु पति का तेजस्वी स्वभाव यदा कदा आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यवहार करें तभी संबंधों में मधुरता हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक स्थिति भी उनकी मध्यम होगी। सास ससुर से संबंधों में तनाव रहेगा जिससे एक दूसरे को यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

आपके पति का राहु के प्रभाव से सास ससुर के प्रति विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उन्हें कोई सहयोग नहीं देंगे। साले एवं सालियां भी उनके उग्रस्वभाव एवं कठोर वाणी से असुविधा की अनुभूति करेंगी तथा उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी। अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने की इच्छुक होंगी तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगी जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा या ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहती हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि सप्तम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि दशम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि एकादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि दशम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरुएवं शनि ग्रह अनुकूल स्थान में होना चौमुखी विकास के संकेत हैं। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खर्च करेंगे।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों के यहां मांगलिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मई के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

पंचम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य व परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा। अप्रैल के बाद आपके बच्चे उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरुकी पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद सप्तम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। स्वस्थ शरीर के लिए अनुशासित दिनचर्या व उचित खान-पान ग्रहण करें साथ ही व्यायाम करना भी लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी मनोनुकूल उपलब्धि प्राप्त करेंगे।

मई के बाद राहु ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा उस समय प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी एवं नौकरी भी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में गुरुग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए उन्नतिकारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

14 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है या पूरे परिवार साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द उठाएं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरुके कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरुके द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे।

- नित्य स्नानादि के निवृत्त होकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ का करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

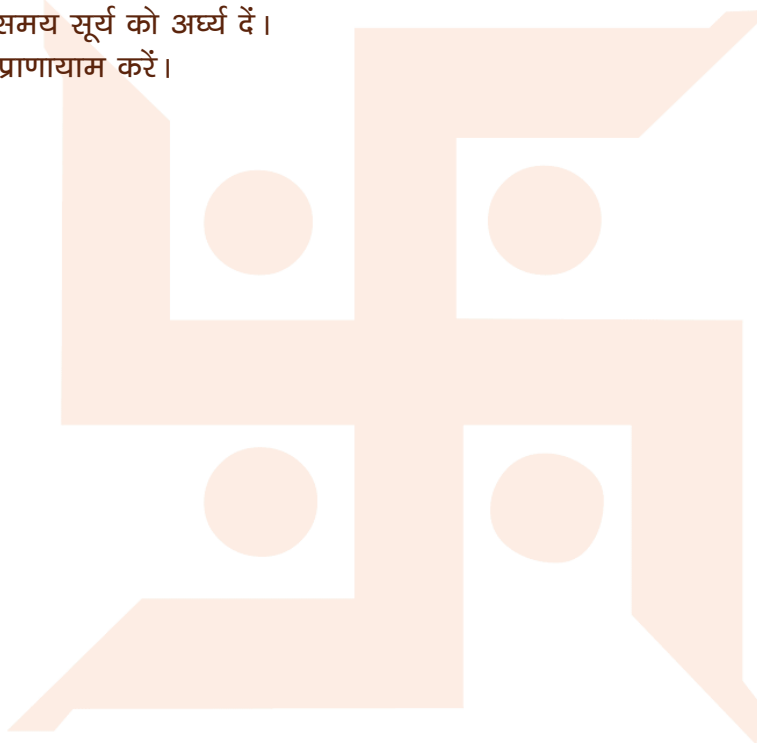
यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वैदिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

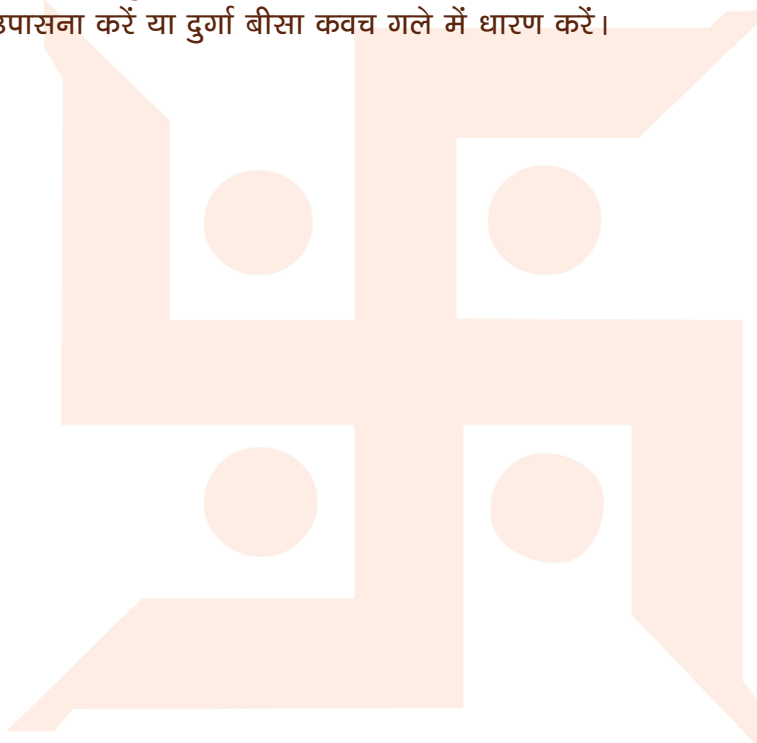
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(12/09/2024 - 12/09/2042)

राहु की महादशा 12/09/2024 को आरम्भ और 12/09/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली स्वास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(12/09/2024 - 26/05/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 12/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 26/05/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि ऐशो-आराम और अय्याशी में हो सकती है। निम्न कोटि के या विदेश के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(26/05/2027 - 18/10/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 12/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 26/05/2027 को प्रारंभ होकर 18/10/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंतर्दशा :- राहु - शनि
(18/10/2029 - 24/08/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 12/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 18/10/2029 को प्रारंभ होकर 24/08/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि को अशुभ ग्रह समझा जाता है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक विचारों के हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है ; वायु से संबंधित व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। उच्चाधिकारी आपसे रुष्ट हो सकते हैं, पद की हानि संभव है। प्रत्येक कदम सावधानी से रखना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें